दक्षिण अफ्रीका
नवम्बर १८, २००३

सन्देश संख्या ६३

(सन्देश संख्या ६२ से क्रमशः)

'अनाम–अस्तित्व' के सहस्रनाम (क्रमशः)

छन्द संख्या – ३१ (सात नाम)

१. अमृतांशूद्भव : अमरत्व के समस्त पहलुओं का उद्‌गम(२८३)
२. भानु : तेजस्वी रूप से जाज्ज्वल्यमान (२८४)
३. शशबिन्दु : शीर्ष बिन्दु (२८५)
४. सुरेश्वर : देवों की दिव्यता (२८६)
५. औषध : निरामयकारी वनस्पतियाँ (२८७)
६. जगत्‌सेतु : नित्य और अनित्य के मध्य सेतु (२८८)
७. सत्यधर्मपराक्रम : ''जो है'' की संसक्ति में अटल (२८९)

छन्द संख्या – ३२ (दस नाम)

१. भूतभव्यभवन्नाथ : अतीत, अनागत और वर्तमान के स्वामी(२९०)
२. पवन : वायु (२९१)
३. पावन : पवित्र (२९२)
४. अनल : अग्नि (२९३)
५. कामहा : इच्छामुक्ति (२९४)
६. कामकृत् : इच्छापूर्ति (२९५)
७. कान्त : आकषणीय (२९६)
८. काम : इच्छा (२९७)
९. कामप्रद : इच्छा को उत्पन्न करने वाला (२९८)
१०. प्रभु : स्वामी (२९९)

छन्द संख्या – ३३ (आठ नाम)

१. युगादिकृत् : काल का सृजन (३००)
२. युगावर्त : कालचक्र (३०१)
३. नैकमाय : आसक्ति से मुक्ति (३०२)
४. महाशन : आत्मसात् करने वाला(३०३)
५. अदृश्य : जिसका कोई रूप नहीं (३०४)
६. व्यक्तरूप : तथापि अनेक रूपों में अभिव्यक्त (३०५)
७. सहस्रजित् : हजारों को जीतने वाला (३०६)
८. अनन्तजित् : असंख्य को जीतने वाला (३०७)

छन्द संख्या – ३४ (दस नाम)

१. इष्ट : कल्याण (३०८)
२. अविशि : असाधारण (३०९)
३. शिष्टेष्ट : शान्त एवं समाहित (३१०)
४. शिखण्डी : मुकुट में मयुरपंख धारण करने वाले (३११)
५. नहुष : भ्रान्तिकारक (३१२)
६. वृष : दृढ़ता (३१३)
७. क्रोधहा : क्रोध को न करने वाला (३१४)
८. क्रोधकृत्कर्ता : क्रुद्ध गतिविधियों को उत्पन्न करने वाला(३१५)

९. विश्वबाहु : ब्रह्माण्ड की भुजायें (३१६)
१०. महीधर : महान् लोगों का आधार (३१७)

छन्द संख्या – ३५ (नौ नाम)

१. अच्युत : जिसे उखाड़ा नहीं जा सकता (३१८)
२. प्रथित : मुख्य (३१९)
३. प्राण : श्वास–प्रश्वास (३२०)
४. प्राणद : श्वास–प्रश्वास का जनक (३२१)
५. वासवानुज : सम्पदा का जनक (३२२)
६. अपांनिधि : महासागर (३२३)
७. अधिष्ठान : आधार (अस्तित्व का) (३२४)
८. अप्रमत्त : त्रुटिविहीन (३२५)
९. प्रतिष्ठित : अच्छी तरह अवस्थित (३२६)

छन्द संख्या – ३६ (नौ नाम)

१. स्कन्द : दिव्य सेना का सेनापति (३२७)
२. स्कन्दधर : सेनापति का रक्षक (३२८)
३. धुर्य : नियन्त्रण से परे (३२९)
४. वरद : वरदाता (३३०)
५. वायुवाहन : वायु का संवाहक (३३१)
६. वासुदेव : परम अस्तित्व (३३२)
७. बृहद्भानु : गहन प्रकाश (३३३)
८. आदिदेव : प्राथमिक भगवत्ता (३३४)
९. पुरन्दर : असुरों का नाश करने वाला (३३५)

छन्द संख्या – ३७ (दस नाम)

१. अशोक : शोकरहित (३३६)
२. तारण : मुक्ति (३३७)
३. तार : मुक्तिदाता (३३८)
४. शूर : बलवान् (३३९)
५. शौरि : बल (३४०)
६. जनेश्वर : सब का स्वामी (३४१)
७. अनुकूल : मित्रवत् (३४२)
८. शतावर्त : सैकड़ों बार पुनः प्रकट होने वाला (३४३)
९. पद्मी : कमलधारक (३४४)
१०. पद्मनिभेक्षण : कमलवत नेत्र से देखनेवाला (३४५)

छन्द संख्या – ३८ (नौ नाम)

१. पद्मनाभ : कमलवत नाभि (३४६)
२. अरविन्दाक्ष : कमलवत नेत्र (३४७)
३. पद्मगर्भ : कमलवत गर्भ (३४८)
४. शरीरभृत् : शरीर में रहने वाला (३४९)
५. महर्द्धि : अविवाद्य प्रभुत्व (३५०)
६. ऋद्ध : विस्तृत (३५१)
७. वृद्धात्मा : पुरातन (३५२)
८. महाक्ष : सुदीर्घ नेत्र (३५३)

६. गरुड़ध्वज : गरूड़ अंकित ध्वजा वाला (३५४)

छन्द संख्या – ३६ (आठ नाम)

१. अतुल : बेजोड़ (३५५)
२. शरभ : अन्तर्ज्योति (३५६)
३. भीम : भीषण (३५७)
४. समयज्ञ : काल का ज्ञाता (काल से मुक्ति) (३५८)
५. हविर्हरि : विषाद, नैराश्य और अभाव को मिटाने वाला (३५९)
६. सर्वलक्षणलक्षण्य : समस्त परिभाषाओं की परिभाषा (३६०)
७. लक्ष्मीवान् : सर्वोच्च वैभव (३६१)
८. समितिञ्जय : सदैव विजेता (३६२)

छन्द संख्या – ४० (दस नाम)

१. विक्षर : जो सड़ता नहीं (३६३)
२. रोहित : जो दिखने में लाल है (३६४)
३. मार्ग : एक मात्र पथ (गमनयोग्य) (३६५)
४. हेतु : एक मात्र प्रेरणा (रखने योग्य) (३६६)
५. दामोदर : (करधनी) एक मात्र निश्चय (अनुसरणयोग्य) (३६७)
६. सह : पूर्ण सहनशीलता (३६८)
७. महीधर : पूर्ण अवलम्बन (३६९)
८. महाभाग : पूर्ण भाग्य (३७०)
९. वेगवान् : पूर्ण गति (३७१)
१०. अमिताशन : पूर्ण क्षुधा (३७२)

छन्द संख्या – ४१ (ग्यारह नाम)

१. उद्भव : (जिससे) सभी की उत्पत्ति (३७३)
२. क्षोभण : पूर्ण दीप्ति (३७४)
३. देव : पूर्ण देवत्व (३७५)
४. श्रीगर्भ : समृद्धि का गर्भ (३७६)
५. परमेश्वर : श्रेष्ठ पूर्णत्व (३७७)
६. करण : उपकरण (३७८)
७. कारण : निमित्त (३७९)
८. कर्ता : करने वाला (३८०)
९. विकर्ता : न करनेवाला (३८१)
१०. गहन : घनीभूत (३८२)
११. गुह : प्रच्छन्न (३८३)

छन्द संख्या – ४२ (दस नाम)

१. व्यवसाय : ''जो है'' के प्रति समर्पण (३८४)
२. व्यवस्थान : व्यवस्था के प्रति समर्पण (३८५)
३. संस्थान : प्रतिष्ठान (३८६)
४. स्थानद : रिक्त स्थान देने वाला (३८७)
५. ध्रुव : दृढ़ लक्ष्य (ध्रुवतारा) (३८८)
६. परर्द्धि : श्रेष्ठ विभूति (३८९)
७. परमस्प : सर्वोच्च स्पता (३९०)
८. तुष्ट : संतु (३९१)

९. पुष्ट : स्वस्थ (३९२)
१०. शुभेक्षण : शुभ दृष्टि (३९३)

छन्द संख्या – ४३ (ग्यारह नाम)

१. राम : सचेतनता का उन्मोचन (३९४)
२. विराम : विश्रान्ति (सचेतनता में) (३९५)
३. विरज : आकांक्षा से मुक्ति (३९६)
४. मार्ग : पथ (३९७)
५. नेय : पथ प्रदर्शक (३९८)
६. नय : पथ पर गति (३९९)
७. अनय : गतिविहीन (४००)
८. वीर : नायक (४०१)
९. शक्तिमतां श्रेष्ठ : उत्कृष्ट ऊर्जा से भरपूर (४०२)
१०. धर्म : पूर्ण व्यवस्था (४०३)
११. धर्मविदुत्तम : पूर्ण व्यवस्था का उत्कृष्ट प्रत्यक्षबोध (४०४)

छन्द संख्या – ४४ (ग्यारह नाम)

१. वैकुण्ठ : पवित्र निवास (४०५)
२. पुरुष : विशुद्ध चैतन्य (४०६)
३. प्राण : श्वास (४०७)
४. प्राणद : श्वास का प्रदाता (४०८)
५. प्रणव : ब्रह्माण्डीय ध्वनि, मौन की ध्वनि ( ) (४०९)
६. पृथु : पृथ्वीराज (४१०)
७. हिरण्यगर्भ : जगमगाती गहराई (४११)
८. शत्रुघ्न : शत्रुहन्ता (४१२)
९. व्याप्त : सुविस्तृत (४१३)
१०. वायु : समीर (४१४)
११. अधोक्षज : ऐन्द्रिक नहीं (शुद्ध तन्मात्रा) (४१५)

छन्द संख्या – ४५ (दस नाम)

१. ऋतु : मौसम (४१६)
२. सुदर्शन : ''जो है'' का अवलोकन (४१७)
३. काल : अनन्तता (४१८)
४. परमेष्ठी : गभीर आशा (४१९)
५. परिग्रह : प्राप्तकर्ता (४२०)
६. उग्र : तीव्र (४२१)
७. संवत्सर : जीवन काल के सम्पूर्ण वर्ष (४२२)
८. दक्ष : विशेषज्ञता (४२३)
९. विश्राम : शिथिलन (४२४)
१०. विश्वदक्षिण : सार्वभौम दान (४२५)

छन्द संख्या – ४६ (नौ नाम)

१. विस्तार : प्रसार या विस्तार (अनन्त तक) (४२६)
२. स्थावरस्थाणु : स्तोत्रों एवं स्तुतियों में वास करनेवाला (४२७)
३. प्रमाण : सबूत (४२८)
४. बीजमव्यय : स्थायी (न घटनेवाला) बीज (४२९)

५. अर्थ : अवधारणा (४३०)
६. अनर्थ : कोई अवधारणा नहीं (४३१)
७. महाकोश : बृहत् आवरण (४३२)
८. महाभोग : बृहत् उपभोग (४३३)
९. महाधन : बृहत् सम्पत्ति (४३४)

छन्द संख्या – ४७ (दस नाम)

१. अनिर्विण्ण : अक्लान्त (४३५)
२. स्थविष्ठ : प्रत्यक्षबोध (न कि अवधारणाओं) में प्रतिष्ठित (४३६)
३. अभू : अनुभव नहीं (४३७)
४. धर्मयूप : त्याग के स्तम्भ (४३८)
५. महामख : महान् त्याग (४३९)
६. नक्षत्रनेमि : तारों का प्रकाश (४४०)
७. नक्षत्री : तारों के स्वामी (४४१)
८. क्षम : योग्यता (४४२)
९. क्षाम : अनन्तता में निवास करने वाले (शाश्वत अस्तित्व) (४४३)
१०. समीहन : भद्रता से पूर्ण (४४४)

छन्द संख्या – ४८ (दस नाम)

१. यज्ञ : समन्वय के लिए साधना (या उपासना) (४४५)
२. इज्य : उपासना के योग्य (४४६)
३. महेज्य : उपासना के परम योग्य (४४७)
४. क्रतु : उपासना की वेदी (४४८)
५. सत्र : उपासना का स्थान (४४९)
६. सतांगति : उपासना में पावन गति (४५०)
७. सर्वदर्शी : पूर्ण द्रष्टा (४५१)
८. विमुक्तात्मा : पूर्ण आध्यात्मिक मुक्ति (४५२)
९. सर्वज्ञ : पूर्ण प्रत्यक्षबोध (४५३)
१०. ज्ञानमुत्तम : परम प्रज्ञा (४५४)

छन्द संख्या – ४९ (दस नाम)

१. सुव्रत : उत्तम प्रतिबद्धता (४५५)
२. सुमुख : उत्तम मुख (दिशा) (४५६)
३. सूक्ष्म : बारीक (४५७)
४. सुघोष : उत्तम ध्वनि (४५८)
५. सुखद : आह्लाद उत्पन्न करने वाला (४५९)
६. सुहृत् : उत्तम मित्र (४६०)
७. मनोहर : मन का विलय (४६१)
८. जितक्रोध : क्रोध को जीतने वाला (४६२)
९. वीरबाहु : बलशाली भुजायें (४६३)
१०. विदारण : बुराइयों को मिटाने तथा परास्त करनेवाला (४६४)

छन्द संख्या – ५० (दस नाम)

१. स्वापन : माया (भ्रान्ति) (४६५)
२. स्ववश : स्वतन्त्र (४६६)
३. व्यापी : सुविस्तृत (४६७)

४. नैकात्मा : न तो एक न ही अनेक (४६८)
५. नैककमकृत् : न तो कर्ता न ही अकर्ता (४६९)
६. वत्सर : निवास (४७०)
७. वत्सल : स्नेह (आसक्ति नहीं) (४७१)
८. वत्सी : स्नेह (करुणा) का उद्‌गम (४७२)
९. रत्नगर्भ : रत्नों का उद्‌गम (४७३)
१०. धनेश्वर : दिव्य सम्पदा (४७४)

छन्द संख्या – ५१ (ग्यारह नाम)

१. धर्मगुप् : धर्म का रहस्य (४७५)
२. धर्मकृत् : धर्म का अभ्यास (४७६)
३. धर्मी : धर्म का अभ्यास करने वाला (४७७)
४. सत् : सत्य (अस्तित्व) (४७८)
५. असत् : असत्य (अनुभव) (४७९)
६. क्षर : नाशवान् (४८०)
७. अक्षर : अविनाशी (४८१)
८. अविज्ञात : अज्ञेय (४८२)
९. सहस्रांशु : हजारों में खण्डित (४८३)
१०. विधाता : सभी खण्डों का धारक (४८४)
११. कृतलक्षण : समस्त प्रवृत्तियों (गुणों) का रचयिता (४८५)

छन्द संख्या – ५२ (आठ नाम)

१. गभस्तिनेमि : समस्त ज्योतियों की ज्योति (४८६)
२. सत्त्वस्थ : सत्य में प्रतिष्ठित (४८७)
३. सिंह : शेर (निर्भीकता) (४८८)
४. भूतमहेश्वर : सम्पूर्ण अस्तित्व का सर्वोच्च स्वामी (४८९)
५. आदिदेव : मुख्य भगवत्ता (४९०)
६. महादेव : महान् देवत्व (४९१)
७. देवेश : पूर्ण देवत्व (४९२)
८. देवभृद्‌गुरु : दिव्य घटना के महानतम संरक्षक (४९३)

छन्द संख्या – ५३ (नौ नाम)

१. उत्तर : समाधान (४९४)
२. गोपति : प्रकाश के स्वामी (४९५)
३. गोप्ता : गुप्त (४९६)
४. ज्ञानगम्य : प्रज्ञा की गति (४९७)
५. पुरातन : प्राचीन (४९८)
६. शरीरभूतभृत् : शरीर के तत्वों की रक्षा (४९९)
७. भोक्ता : उपभोक्ता (५००)
८. कपीन्द्र : वानरों का स्वामी (५०१)
९. भूरिदक्षिण : प्रेम का उदार दान (५०२)

छन्द संख्या – ५४ (दस नाम)

१. सोमप : भक्ति का सुधापान (५०३)
२. अमृतप : अमरत्व का सुधापान (५०४)
३. सोम : भक्ति का चन्द्र (५०५)

४. पुरुजित् : पूर्ण विजय (५०६)
५. पुरुषोत्तम : पूर्ण चैतन्य (५०७)
६. विनय : विनम्रता (५०८)
७. जय : विजय (५०९)
८. सत्यसंध : सत्य की खोज (५१०)
९. दाशार्ह : अर्पण ग्रहण करने वाला (५११)
१०. सात्वतां पति : सम्पूर्ण प्राणियों का स्वामी (५१२)

छन्द संख्या – ५५ (आठ नाम)

१. जीव : जीवित प्राणी (५१३)
२. विनयितासाक्षी : विनम्र प्रत्यक्षदर्शी (५१४)
३. मुकुन्द : मुक्तिदाता (५१५)
४. अमितविक्रम : अपरिमेय संगठन (५१६)
५. अम्भोनिधि : भक्ति के निधि (५१७)
६. अनन्तात्मा : असीम अस्तित्व (५१८)
७. महोदधिशय : अस्तित्व सागर में शयन (५१९)
८. अन्तक : सृष्टि का विलय (५२०)

छन्द संख्या – ५६ (दस नाम)

१. अज : अजन्मा (अमर) (५२१)
२. महार्ह : परमपूजनीय (५२२)
३. स्वाभाव्य : सहजावस्था एवं सहज भाव में प्रतिष्ठित (५२३)
४. जितामित्र : निरन्त मैत्री (५२४)
५. प्रमोदन : सर्वदा प्रफुल्लित (५२५)
६. आनन्द : परमानन्द (५२६)
७. नन्दन : शिशु (५२७)
८. नन्द : प्रसन्नता (५२८)
९. सत्यधर्मा : ''जो है'' के अवलोकन हेतु ऊर्जा का संग्रहण (५२९)
१०. त्रिविक्रम : तीनों लोकों (स्वर्ग, मर्त्य और पाताल) का संगठन (५३०)

छन्द संख्या – ५७ (सात नाम)

१. महर्षि कपिलाचार्य : सांख्य दर्शन के महान् उपदे षि कपिल (५३१)
२. कृतज्ञ : एहसानमंद (५३२)
३. मेदनीपति : इस पृथवी का स्वामी (५३३)
४. त्रिपद : तीन पैरों वाला (५३४)
५. त्रिदशाध्यक्ष : तीन राज्यों का स्वामी (दो विरोधी–द्वैत–मन और मुक्ति अर्थात् निर्मन') (५३५)
६. महाशृङ्ग : विशाल सींग धारण करने वाले (मनुष्यों को माया से जगाने हेतु) (५३६)
७. कृतान्तकृत् : समस्त उत्पत्ति का अन्तर्लयन (५३७)

छन्द संख्या – ५८ (नौ नाम)

१. महावराह : विशाल शूकर (५३८)
२. गोविन्द : सुस्प प्रकाश रश्मि (५३९)
३. सुषेण : उत्तम वैद्य (चिकित्सक) (५४०)
४. कनकाङ्गदी : भुजाओं पर स्वर्ण आभूषण धारण करने वाले (५४१)
५. गुह्य : गुङ्गा (५४२)

६. गभीर : गहरा (५४३)
७. गहन : अभेद्य (५४४)
८. गुप्त : गोपनीयता (५४५)
९. चक्रगदाधर : चक्र और गदा धारण करने वाले (५४६)

छन्द संख्या – ५९ (ग्यारह नाम)

१. वेधा : ब्रह्माण्ड में चरम (५४७)
२. स्वाङ्ग : विदेह का मूर्तरूप (५४८)
३. अजित : अपराजेय (५४९)
४. कृष्ण : बाँसुरी बजाने वाले (५५०)
५. दृढ : किन्तु सुदृढ़ (५५१)
६. संकषणोऽच्युत : असीम अन्तर्लयन (५५२)
७. वरुण : अस्त होते सूर्य की रश्मि (५५३)
८. वारुण : वरूण के पुत्र (अगस्त्य) (५५४)
९. वृक्ष : पेड़ (५५५)
१०. पुष्ङ्गराक्ष : पोषक तत्वों का परिपोषण (५५६)
११. महामना : परम चैतन्य (५५७)

छन्द संख्या – ६० (नौ नाम)

१. भगवान् : दिव्य ईश्वर (५५८)
२. भगहा : लयकर्ता ईश्वर (५५९)
३. आनन्दी : परमानन्द प्रदाता (५६०)
४. वनमाली : वनरक्षक (५६१)
५. हलायुध : हल चलाने वाला (५६२)
६. आदित्य : अप्रतिम प्रकाश (५६३)
७. ज्योतिरादित्य : अनुपम दीप्तिमान प्रकाश (५६४)
८. सहिष्णु : आनन्दमय सहनशीलता (५६५)
९. गतिसत्तम : ''जो है'' की गति (न कि ''क्या होना चाहिए'' की) (५६६)

छन्द संख्या – ६१ (सात नाम)

१. सुधन्वा : अतिसम्पन्न (५६७)
२. खण्डपरशु : विखण्डन (५६८)
३. दारुण : पराकाष्ठा (५६९)
४. द्रविणप्रद : मोक्ष प्रदाता (५७०)
५. दिविस्पृक् : दिव्य प्रकाश प्रदान करने वाला (५७१)
६. सर्वदृग्व्यास : प्रज्ञावानों में अति प्रज्ञावान (५७२)
७. वाचस्पतिरयोनिज : अद्वितीय स्वतन्त्र वक्तृता (५७३)

छन्द संख्या – ६२ (बारह नाम)

१. त्रिसामा : तीनों सामञ्जस्य का संगीत (५७४)
२. सामग : संगीतों का गायक (५७५)
३. साम : सामवेद (वेदान्त के अतिनिकट) (५७६)
४. निर्वाण : परम मुक्ति (५७७)
५. भेषज : सम्पूर्ण व्याधियों का उपचार (५७८)
६. भिषक् : सम्पूर्ण व्याधियों का उपचार करने वाले (५७९)
७. संन्यासकृत् : त्याग की क्रिया (५८०)
८. शम : संतुलन (५८१)

९.	शान्त	: शान्तिपूर्ण (५८२)
१०.	निष्ठा	: समर्पण (५८३)
११.	शान्ति	: अमन चैन (५८४)
१२.	परायण	: परम गन्तव्य (५८५)

सन्देश संख्या ६४ में क्रमशः –

'' परमात्मने नमः ''